B-2
L-30
MIH

राष्ट्रीय संघर्ष / कांग्रेस / गाँधी की भूमिका :-

• हमारे राष्ट्रीय संघर्ष में प्राचीन सांस्कृतिक प्रतीकों व धार्मिक तत्वों का प्रयोग किए जाने से मुस्लिम समुदाय राष्ट्रीय संघर्ष से प्रतिकर्षित होता रहा।

प्रथम चरण की क्रान्तिकारिता व तिलक के नेतृत्व में उग्रवादी नेतृत्व कर्ताओं ने जिस तरह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया, सांस्कृतिक पुनर्जागरण का समर्थन किया, इससे राष्ट्रीय संघर्ष हिन्दू वादी आंदोलन अधिक प्रतीत होने लगा और मुस्लिम समुदाय को अपने हितों की रक्षा को लेकर बेचैनी बढ़ने लगी।

1916 के लखनऊ समझौते में कांग्रेस द्वारा विशेष साम्प्रदायिक निर्वाचन प्रणाली को स्वीकार लेना ही एक बड़ी भूल साबित हुआ। क्योंकि अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की इस नीति ने अपने राजनैतिक प्रतिनिधित्व को लेकर मुस्लिम नेताओं में अपने विशेष महत्व की महत्वाकांक्षा को बढ़ावा दिया।

गाँधी जी भी साम्प्रदायिकता के वास्तविक स्वरूप को समझने में असफल रहे और उन्होंने कई अवसरों पर मुस्लिम समुदाय का साथ लेने के लिए मुस्लिम नेताओं की नाजायज माँगों को भी स्वीकार लिया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

गाँधी के इस तुष्टिकरण ने स्वार्थी नेताओं की आकांक्षा को और बढ़ा दिया वस्तुतः गाँधी राष्ट्रवाद को एक बड़ा व महत्वपूर्ण विषय मानते थे और उनकी सोच थी कि अंततः राष्ट्रीय भावना साम्प्रदायिकता को अच्छादित कर लेगी।

गाँधी साम्प्रदायिकता का सही आकलन करने में चूक गए और वे इसके पीछे ब्रिटिश षणयंत्र का सही आकलन न कर सके, इसीलिए राष्ट्रवाद के साथ-साथ साम्प्रदायिकता भी बढ़ती गई और हमें आजादी के साथ ही विभाजन को भी स्वीकारना पड़ा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

पाकिस्तान अलगाववादी आंदोलन

प्रथम चरण :-

- सर सैय्यद अहमद ने भारत में द्विराष्ट्र सिद्धांत को जन्म देते हुए कहा कि यहां हिन्दू और मुसलमान दो राष्ट्र हैं।
- 1930 में मोहम्मद इकबाल ने मुसलमानों के लिए अलग राष्ट्र की माँग की।
- 1932 में कैंब्रिज छात्र चौधरी रहमत अली ने "अभी नहीं तो कभी नहीं" नामक पंपलेट निकाला और उसने मुसलमानों के लिए अलग राष्ट्र का नाम पाकिस्तान दिया।

द्वितीय चरण :-

• 1937 के चुनावों में मुस्लिम लीग को करारी हार का सामना करना पड़ा और यहाँ तक कि वह विशेष साम्प्रदायिक निर्वाचन क्षेत्रों में भी मात्र 10% प्रतिशत वोट हासिल कर सकी थी इस शिकस्त के बाद जिन्ना धर्म आधारित राजनीति करने लगे और अपने आप को मुस्लिम हितों का रक्षक घोषित कर दिया। इसलिए जब 1939 में कांग्रेसी सरकारों ने इस्तीफा दिया तो जिन्ना ने इसे मुक्ति दिवस मनाया और कहा कि यह हिन्दू राज्य से मुक्ति है।

• 1940 में मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में पाकिस्तान प्रस्ताव का पारित होना अब इस विषय को व्यवहारिक व आधिकारिक रूप देने लगा और जब 1943 में "विभाजन करो और छोड़ो का नारा" लीग ने दिया तो पाकिस्तान अलगाववादी आंदोलन को और उग्रता मिलने लगी।

• 1945 के चुनावों में मुस्लिम लीग एक प्रभावी शक्ति बन कर उभरी और उसने विशेष निर्वाचन प्रणाली में लगभग 88% प्रतिशत वोट पाकर अपने आप को मुसलमानों की सर्वोच्च संस्था के रूप में स्थापित कर दिया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

तृतीय चरण :- 1946-47 – विभाजन की अनिवार्यता :-

• 1946-47 के बीच की मुख्यतः तीन घटनाओं ने ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित कर दीं की भारत विभाजन को टाला न जा सका

A- 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग ने प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस की घोषणा की और नारा दिया " लड़ के लेंगे पाकिस्तान " इस घोषणा ने लगभग पूरे भारत में साम्प्रदायिक दंगो को भड़का दिया और गृह युद्ध की स्थिति उत्पन्न कर दी।

B- 1946 के कैबिनेट मिशन प्रस्ताव पर अन्तरिम सरकार गठित की गई जिसमें पहले तो मुस्लिम लीग ने शामिल होने से इनकार कर दिया किन्तु बाद में सरकार में शामिल होकर उसकी कार्यवाहियों को बाधित करने लगे जिससे अराजकता की स्थिति उत्पन्न होने लगी

उल्लेखनीय तत्व यह भी था कि दंगो के समय सरकार पुलिस या सैनिक कार्यवाही करने में असमर्थ रही यह विषय अभी भी अंग्रेजों के पास था अतः सरकार में होते हुए भी दंगों को न रोकपाने से एक असहज स्थिति पैदा हो गयी थी।

C- माउंटबेटन भारत के प्रायः सभी बड़े नेताओं को यह समझाने का प्रयास कर रहे थे कि

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

यदि वे विभाजन के लिए मान जाएं तो वे एक वृहद और समृद्ध भारत के निर्माण में सहयोग करेंगे।

इन तीन घटनाओं ने कांग्रेस व अन्य भारतीय नेतृत्वकर्ताओं को भारत विभाजन स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया। "शांति की स्थापना" व भारत के बेहतर भविष्य का आकलन करते हुए विभाजन को स्वीकारना पड़ा जैसे कि - सरदार पटेल के कथन से स्पष्ट हो जाता है कि भारत में जो परिस्थिति पैदा बन चुकी है यदि हम पाकिस्तान को नहीं स्वीकारते तो फिर अनेक पाकिस्तान की परिस्थिति उभरने लगेगी नेहरू ने स्पष्ट कहा कि वे धर्म के आधार पर विभाजन के सिद्धांत को नहीं स्वीकार रहे बल्कि विभाजन को इस रूप में देखा जाना चाहिए जैसे कि दो भाईयों के बीच सम्पत्ति का बंटवारा होता है। वहीं गांधी जी जो किसी भी तरह विभाजन के पक्ष में नहीं थे और यहाँ तक कहते थे कि विभाजन मेरी लाश पर होगा किन्तु जब नोआखली के दंगे के समय उनकी भूख हड़ताल शान्ति स्थापना में भी असफल रही तो उन्होंने कहा मैं कोई ऐसा मंत्र नहीं जानता जो लोगों के मनों को जोड़ सके।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

विशेष :- 2019 में केरल हाईकोर्ट ने यह निर्णय दिया कि द्विराष्ट्र सिद्धांत को भारत नही मानता अत: हिन्दू व मुस्लिम राष्ट्र भारत के सन्दर्भ में सही नहीं हैं

भारत विभाजन के सिद्धांत :

(i) अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत :- 1945 में द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद वैचारिक या मानसिक युद्ध के रूप में विश्व व्यवस्था शीत युद्ध के दौर में प्रवेश कर गयी। अमेरिका व सोवियत संघ भारत को अपने पक्ष में करना चाहते थे किन्तु जब नेहरू ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपना ली तो इन दोनों महाशक्तियों को भारत का विभाजन लाभदायक लगने लगा।

(ii) लंदन की प्रक्रिया :-

- द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण ब्रिटेन की आर्थिक व सैन्य क्षमता कमजोर हो चली थी और यहाँ तक कि भारत का ही ब्रिटेन पर ऋण स्थापित हो गया था।

- भारत में ब्रिटिश ICS अधिकारी जिन्हें स्टील फ्रेम कहा जाता था भी कमजोर होने लगा। 40 प्रतिशत से अधिक भारतीय ICS बन चुके थे तो दूसरी तरफ आज़ाद हिंद फौज व शाही

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

नौ सेना विद्रोह ने जिस तरह सैनिक व असैनिक लक्ष्य एक कर दिए तथा स्वतः विद्रोहों की श्रृंखला स्थापित होने लगी, उससे ब्रिटिश अधिकारी अब भारत में रहने के इच्छुक नहीं थे।

यही कारण था कि ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने पहले जून 1948 में भारत की स्वतंत्रता की बात कही किन्तु उन्हें 15 अगस्त 1947 को ही भारत को आजाद करना पड़ा।

(iii) <u>क्षेत्रीय सिद्धांत</u> :-

(i) <u>संरचनात्मक</u> :- 1937 के चुनावों के बाद धर्म आधारित राजनीति ने मार्ले-मिंटो एक्ट के द्वारा बोये गए विषैले बीज को खाद पानी देना शुरू कर दिया। 1945 आते-आते हिन्दू और मुस्लिम के बीच "हितों की टकराहट" इस स्तर पर आ गई कि दंगों की स्थिति उभरने लगी और 1946 में प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस की घोषणा के बाद गृह युद्ध जैसी परिस्थितियों में भारत का विभाजन ही एकमात्र हल दिखाई देने लगा।

(ii) <u>व्यक्तिगत कारण</u> :- पहचान की प्रतिस्पर्धा ने भी विभाजन को बढ़ावा दिया विशेषतः नेहरू व जिन्ना के बीच पद की योग्यता का विषय और अहम का टकराव बढ़ता गया तो दूसरी तरफ सरदार पटेल भारत में शान्ति व स्थापित्व के लिए विभाजन को स्वीकारने लगे।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

इस तरह व्यक्तिगत स्तर पर भी महत्वपूर्ण नेताओं में विभाजन की स्थिति बनने लगी

निष्कर्ष :-

वस्तुतः भारत का विभाजन भारत की आजादी का एक साम्राज्यवादी ड्रामा था। अंग्रेजों ने अपने शासन के दौरान "फूट डालो और राज करो" की नीति को ऐसा अंजाम दिया कि उग्रवादी साम्प्रदायिकता ऐसी स्थिति में आ गई की चाह कर भी इसे नियंत्रित नहीं किया जा सका।

अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत एक साथ हर्ष और शोक दोनों को स्वीकारना पड़ा। आज का भारत भी अंग्रेजों द्वारा बोये गए इस विषैले बीज से मुक्त नहीं हो सका है और विशेषतः राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के क्रम में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठते हैं। अतः इस साम्प्रदायिकता को उत्पत्ति एवं विकास को सही तरीके से समझना व समझाना न सिर्फ इतिहास के लिए बल्कि वर्तमान व भावी पीढ़ी के लिए अति-आवश्यक है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
A Trusted Learning Platform
KHAN SIR